मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 3, अंक 58, अप्रैल(प्रथम), 2019

अभि व्यक्ति:

यातना और अंधकार मय जीवन के उजास फेलने प्रेरित करती कवितायेँ: सामाजिक चेतना जगानी है .....

"खोजना होगा अमृत कलश"

काव्य संग्रह

राजकुमार जैन 'राजन' का प्रस्तुत काव्य संग्रह "खोजना होगा अमृत कलश" प्राप्त करने का सौभाग्य मिलने से बहुत ख़ुशी हुई है |

देव-दानव "अमृत कलश" के लिए एक दुसरे से लड़ाई कर रहे थे | इसे प्राप्त करने की स्पर्धा चलती थी | हमें कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा है और देवो की तरफ अमृत कलश दुसरे हाथों में पहुँच गया है |

यह कविता संग्रह से एक बार जरुर अमृत पीना होगा | इस में अंधकार से प्रकाश की ओर ले जानेवाली ये रचनाए हमें प्रेरित करती है | हमरा आत्म विश्वास बढाती है | समाजीक, आर्थिक, प्राकृतिक, सामाजिक परम्पराओ में पनप रही विषमताओं के प्रति आक्रोश है | हताश और हरे हुए व्यक्ति को प्रेरित करती ये कवितायेँ आजके संघर्षमय जिन्दगी खोते हुए रिश्तों के मूल में ठुकेराघाट करती है | अंधकार से प्रकाश की ओर आगे बढ़कर जीवन में एक नया सूरज उगाकर सहायता प्राप्त करने प्रेरित करती ये कवितायेँ बहुत उत्कृष्ट है | भारतीय लोकहित हित की ओर कविता के माध्यम से इशारा भी किया है |

इनकी कवितायेँ आशा और विश्वास जगाती है | कवि के कला रेखांकन भी बहुत सुंदर है | राजन में संवेदना बहुत भरी पड़ी हुई है तभी तो इतनी संवेदन शील रचना का जन्म हुआ है | इसके कारण सामाजिक मूल्यों, संस्कृतीक, राजनितिक, आर्थिक और पुराने समय से लेकर वर्तमान समय तक अपने दिव्य द्रष्टि इसे एक नया मार्ग दिखाती ये कवितायेँ बहुत प्रेरक है | में इन्हें अपने दिल से पवित्र मन से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ |

कविताओं का विवरण देनेका और किसी किताब के बारे में अपना मत व्यक्त करने का मेरा यह प्रथम प्रयत्न आप सभी को पसंद आएगा ऐसी आशा करता हूँ | अगर इसमें कोई गलती हो तो क्षमा याचता हूँ |

अमृत कलश में लाखों संकल्प कविता में कवि के आज के युग की चिंताओं का जिक्र किया है | द्रोणाचार्य, अभिमन्यु और अर्जुन महाभारत के पात्रों का उदहारण देकर आज के हस्तिनापुर की बातें की है और आजके युग में दुर्योधनों के कमी नहीं है ये बत कविता के माध्यम से की गई है |

आज मानवता और विश्वास खो गये हैं | आज-कल खुनी खेल जो खेले जा रहें हैं वो इतिहास बन जायेगा | इसी संभावना कवि ने देखी है, ये "बन जायेगा इतिहास" कविता से ये

संभावना निकल आई है |

इन्सान को टूटते हुए दर्पण में देखा है, सर्वथा जेसे सार्थकता नहीं खोना | इस तरह आज दर्पण बनोगे तो सार्थकता प्राप्त होगी ये बात “सार्थकता” कविता में लिखी गई है |

यह धरती पर अमृत के जगह विष बीज किसने बोया ? इसकी चिंता कवि ने प्रकट की है |

२. कहीं बम धडाके, विधवाओं के चीत्कार, पशुओं का विलाप, लूंट हारा बलात्कार घटता देखकर कवि ने अपील की है कि आओ हम सब मिलकर जिन्दगीका गीत लिखे ये बात “जिन्दगी का गीत” में राजन ने की है |

साँझ के अंधेरों में चांदनी की शीतलता, धर्मशालाओं में गुरुओं की वाणी को ढूँढने में इन्सान असमर्थ है | आज सूर्य किरणों की चमक ने इन्सान को पक्षिओं का कलरव, फूलों का रंग, मिट्टी की गंध, गीतों की ह्रदय को छू लेने वाली वाणी आज अंत हित यात्रा का अनुभव कराता है ये अंत अनुसंधान में दिखाया गया है |

अंधकार के बीज मिन अंधकार के सामने लड़ने के लिए इन्सान को अपना अंतर्मन की मशाल जलने को आह्वान अंधकार के बीज कविता में किया गया है |

फूलों की मुस्कराहट, हवा की खुशबु, चांदनी के पांव के घुंघरू और संस्कृति को ले जाने वाले ‘तुम कौन हो’?. आजकल मरनेवालों से मरवाने वाले बड़े होते हैं |

पतझड़ से डर का मतलब, जिन्दगी की दौड़ में मिलती कठिनाईयां से नहीं डरकर एक हाथ में बसंत लेकर उसका सामना करने चलते रहने की बात कवि ने ‘हाथ में बसंत’ कविता में की है |

३. आसमानी हवाओं की खुशबु, धीरे धिरे बहती नदी के कल कल, चिड़िया के चिहु चिहु के साथ मुस्कराहट और सूखे गुलाब के फुल की तरह तुटता हुआ विशवास, श्रद्धा को देखकर कवि व्यथित होता है | इसे “नियति” का क्रम मान के स्वीकार किया है |

मंजील की तलाश में कंटीला सफर में चलते हुए भी इन्सान कभी हारा नहीं है | वो एक एक कर संघर्ष के साथ चलता आगे बढ़ रहा है | “हारा भी नहीं हूँ मैं” कविता में देखने को मिलती है |

दादर पुल का उदहारण देकर कवि राजन ने हासिये पर बैठ कविता में लिखा है की पुल के नीचे एक निराश मन के साथ रोशनी का टुकड़ा ढुंढता, फटी पेंटवाला स्वप्नों के घरोंदे से बुनता हुआ, अपमानित होता हुआ, जुल्म सेहता हुआ, खामोशियों के साथ रोशनी की तमन्ना के साथ चलते इन्सान का सुंदर वर्णन किया है |

स्वप्नों के साथ नई आशा लेकर, आती हुई सुबह शाम होते ही इच्छाएं मौन हो जाती है | इस लिए कवि राजन कहतें कि, समय के हाथ में रोशनी को लेकर धरती में इसे उगाओ, शब्द

बीज खाद डालकर धैर्य रूपी पानी से सिंचन करने से तुम्हे सफलता जरुर प्राप्त होगी | ऐस बोध 'अस्तित्व बोध' कविता में दिया गया है |

आत्मीय के स्थान पर मुखौटा के रुप में मिलते सफेद पोषाक के सेवक द्वारा चिर हरण, इच्छा, लालसा, लोभ, प्रमाद, आस्था खो चुके इन्सान बन गया है, लेकिन प्रतीक्षा है की सूर्य के किरपा जैसी गमे जैसे आंधियां दूर करने के लिए 'आशा की लौ जलती रहेगी' ऐसी कल्पना कवी ने की है |

स्वप्नों की पगदंडी पर चलते चलते आज इन्सान के पांव थम गये हैं | भौतिकता के मीठे विष में विश्वास गलत साबित होने लगा है | फिर भी वो चल रहा है, बढ़ रहा है सूर्य की तलाश में | कवि को आशा है कि जीवन में एक नई स्वप्नों की पगदंडी जरुर खुलेगी और सफलता प्राप्त होगी |

आज लोगों के जीवन में अजीब सी ख़ामोशी, मौन और सनात्ता है | अनाम, अन गिनत पीड़ा और प्रश्नों का डंख से समय कंही खो गया है | कवि कहेते हैं कि सफलता के लिए आशा का पूरा सूरज अपनी "हथेली में उगाओ" जरुर सफलता प्राप्त होगी |

भाषणों के माध्यम से एक शतरंगी चाल वाला अभियान चलाया जा रहा है | घडियाली आंसू बहाया जा रहा है | गाँव के चौपाला से लेकर मंदिर, मस्जिद, धर्मशाला और संसद के गलियारों के तक बड़ी सावधानी से इन्सान इन्सान के बीच अलगतावाद पहेन कर विष बांटा जा रहा है | इसलिये कवि 'राजन' के मन में सवाल उठकर बार बार कहता है कि ये दुनिया ऐसी क्यूँ है ? एक सवाल कविता में कवि ने कहा है की वही पुराना सवाल पूछता रहूँगा कि ये दनिया ऐसी क्यूँ है |

आज इन्सान के कानों ने सुनना छोड़ दिया है | ह्रदय पत्थर सा हो गया है | झूठ कपट के वेश में रिश्तों को छलनी कर दिया है | इन्सानियत का रंग खो गया है | क्या यही है "अच्छे दिन का बोध" क्या यही है अर्थ युग का कामत्कर ? कवि के मन में प्रश्न उठता है |

सूखे फूलों ने अपनी गंध को पकड़ रखी है | स्नेह के आभाव में है | आज आशाओं के दीप बुझते जा रहे है | कोई सूखे गुलाब के फुलों से महसूस करें | क्यों अहंकार के सामने जंग नहीं छेड़ते हम ? सूखे फूलों की गंध कविता में ये सुदर बात कवि ने की है |

कवि ने बेरोजगार की पीड़ा बहु खूबी से व्यक्त की है | बेरोजगार को हमारी दुनिया का महत्व का अंग माना है | ऐसी बात कवि ने बेरोजगार कविता के माध्यम से की है |

नहीं देखा मैंने समुद्र फिर भी मेरे मन को कोई छूता है तो मेरे मन के ____ लहरे उठाकर फेंक देती है | तूफान बाद समुद्र खामोश हो जाता है | नहीं देखा समुद्र फिर भी उसकी गर्जना को महसूस करता हूँ |

अंतहीन आकाश में विश्वास की बाँहों में अजीब सी ख़ामोशी और सन्नाटा को चिरते हुए मन में उठतें है, इन सांसों से गुजरते है | भविष्य को एक मजबूत समाज की तलाश पुरी करने के

लिए आँखों में संकुरित स्वप्नों को खींचने के लिए तुम्ही ने तो कहा था | “वसंत जरुर आएगी एक दिन”| कवि कहते है कि प्यार और जीवन की परिभाषा करते कभी गाढ रिश्ते अपना अर्थ खो चुके हैं | तुटते हुए मूल्यों क आंधी से आज संबंधों का वृक्ष हिल रहा है |

कवि राजन कहते हैं कि सूरज ढलने के बाद भोर हो जाती हैं | फिर सुबह में रोशनी आती है | इस लिए अँधेरे से डरो मत | फसले शांति की उगाओ तो प्यार की जिन्दगी शुरु होगी | इस लिए भागे न कोई हार के |

तुटी हुई खटिया पर खांसती लेटी हुई माँ, सयानी हो रहि मुनिया, किताब और पेन को लिए जिद करता मुन्ना को देख कर अनाज मंडी में कंधे पर बोरियां ढोता, बीडी के काश में धुंआ उठाता, पसीने से तर-बतर वह आदमी निराश नहीं है |

संस्कृति के पोषक इस देश में दौपदी के चीरहरण आज भी हो रहे है | आदमी नपुंसक हो गया है | आदमी तुम कायर हो | कवि कहते है कि संस्कृति खो गई है | समुद्र शरमिंदा है | आज नर बीज खो गया है |

प्रकृति के तांडव के कारन उतरा खंड कभी नेपाल कभी कश्मीर के मौत की बरसात हो रही है | आज भरे पेटों के जूठन भूख से बिलखने लगा है जीवन | आतंक के छाया को दूर करने के लिए रोशनी के पाहरूओ को जलती मशाले लेकर क्या प्रकाश फेलाने की सीख कवि राजन “रोशनी के पहरुओं” कविता में दे रहे है ?

सृष्टि में सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता है | ये निरंतर प्रक्रिया चलती है | नन्ही कोपलें फूटती है और सन्देश देती है कि एक नया संघर्ष उत्कर्ष लाति है |

अंधकार में होती हिलचाल को मिटने के लिए उजाला फेलाने को सूरज की इजजत लेकर एक किरण हमारी जिजीविषा को पुनर्जीवन देगी |

इस देश की बदहाल प्रजा को बड़े बड़े स्ट्रीट लाईट की रोशनी जेसे जगमगाते आश्वासन मिलते हैं | एक मुठठी होंसले के रोशनी सजाते अंधकार को पराजित करने के लिए एक सूरज फिर उगाना होगा कविता में सुझाव दिया गया है | एक सूरज फिर उगाना होगा |

रोशनी में रहकर भी अंधकार में जी रहे इन्सान आज मरने से पहेले मरना चाहता है | समय के सूरज को अपने हाथों हिलाकर बाँध कराना सूरज से एक नई सुबह जरुर होगी |

‘बचपन की बरसात’ कविता में कवि कहते है | मुशलधार बारिश में चूं रही पानी की टप टप को कवि ने अमृत कलश में ढोया है |

खोजना होगा अमृत कलश कविता में राजन जी बताते है कि रंग बदलती दुनिया में दर्द का रंग नहीं बदल पाता है | इन्सान इतना बौना हो गया है कि अपना कहा ही भूल गया है | विश्वास भटक गया है | मुस्कराहट भीड़ में खो गई हैं | संबंधों पर पहरा है | इंसानियत बहरी है |

जीवन मूल्य अंधकार में खो गया है | सब तरफ मासाजानी में जज्बाती और भावनाओं

की कोई किंमत नहीं है इस दुनिया में |

कवि कहते हैं कि, सपनों की दुनिया से बाहर निकल कर यातना शिविर से फैले जाल को अब तोडना होगा ऐसा आह्वान करते है | धरा पर पीला प्यार की खुशबु मानवता के घर आंगन को जो रोशन करे, सद्भाव के दिए जलाए हमें अमृत कलश खोजना होगा |

उदय होता सूरज सत्यम शिवम् सुन्दरम का प्रकाश फिर से फैला देगा |

राजकुमार राजन बाल साहित्य के क्षेत्र में विस्तार से काम कर रहे हैं |३० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित है | सौ से अधिक पुरस्कार प्राप्त किये है | साहित्य और समाज के प्रति ऐसे उमदा भावना बहुत कम लोगों में दिखाई देती है | राजन जी युवा कवि है | साहित्य से समभावना और रचनात्मक सामाजिक सह्भावना और समाज के प्रति संवेदना प्रकट करते कवि है |

मैंने विस्तार से संग्रह की प्रत्येक कविताओं का विवेचन पाठकों के लिए संक्षिप्त में देने का प्रयास किया है | जिस कविता का विवेचन हम से छुट गया है वो कवितायेँ पाठकों के लिए विवेचन करने हेतु मैंने छोड़ दिया है |

अंत में यही कहूँगा कि राजकुमार जैन राजन बहुत इमानदार, मानवतावादी सीपाई, समाज उत्प्रेरक और एक वैभव की भूमिका निभाते है | वर्तमान में अंधेरों में भी ये कवि जाग रहा है और काम के लिए प्रश्न खोज रहा है | आज उनकी कविताएँ पढ़ेंगे तो आपको भी ये कवितायेँ सार्थक लगेगी ऐसा हमें विश्वास है |

मेरी दिल से हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएं श्री राजकुमार जैन “राजन” जी को अर्पित है |

दिनांक: १५/५/२०१८
गांधीनगर

गुलाबचंद एन.पटेल
कवि/लेखक/अनुवादक
नशा मुक्ति अभियान प्रणेता

‘हरिकृपा’,
प्लोट नं.१२७/१,
सेक्टर-१४,
महात्मा मंदिर के पास
गांधीनगर-३८२०१६
गुजरात
मो: ९९०४४ ८०७५३
ईमेल: patelgulabchand19@gmail.com